रिकॉर्ड :– आखिर वो दिन आया आज..... ॐ पिताश्री 7/9/63
आज फिर से ओम् शांति का सेकण्ड का अर्थ समझाते हैं; क्योंकि नई–2 माताएँ आती हैं। ओम का अर्थ है– मैं आए अहम्। अहम के पीछे मम अथवा मेरा भी है। ओम माना आत्मा। अहम आत्मा, मम शरीर। मैं आत्मा। किसका बच्चा? ज़रूर प० का बच्चा होगा। सभी आत्माएँ इस बाप के बच्चे हैं। इस बाप की सारी महिमा है। अब बाप समझाते हैं। यह अशरीरी, पतित दुनिया हो गई है। गाँधी भी मानते थे तब तो गाते थे, पतित–पावन। तो ज़रूर सभी पतित हैं ना। अब जब वो आवे तब आकर पावन बनावे। कोई कहे, इतने साधु–महात्माएँ हैं। क्या वह भी पतित हैं? बाप कहते हैं, यथा गुरु पतित तथा चेले। यह है ही पतित दुनिया। कलियुग में है ही तमोप्रधान। सभी दुखी हैं। भारत सारा कंगाल है। नाटक सारा भारत पर है। भारत सिरताज, भारत मोहताज। साधू–सन्यासी भी ईश्वर को नहीं जानते। जो नहीं जानते, वह 100% नास्तिक हैं। नास्तिक ठहरे न जानने वाले, आस्तिक ठहरे जानने वाले। अब जाने कैसे फादर शोज़ सन, सन शोज़ फादर; परन्तु जब तक फादर ने बच्चों को परिचय दिया ही नहीं है तब तक बच्चे जाने कैसे! फादर का ऑक्युपेशन तो है। नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं तो इससे स्वर्ग की बादशाही मिल सकती है ना। स्वर्ग किसको कहा जाता है, कोई विद्वान–पण्डित इतना भी नहीं जानते। तो गीत भी सुना, दुनिया है निधणकी। जैसे बच्चे लड़ते हैं तो कहते– कोई धणी–धोणी नहीं है। अब तो घर–2 में स्त्री, पति, बच्चे, सभी लड़ते रहते हैं। पोइज़न से जन्म लेते हैं, तो बिच्छू–टिंडण ही निकलेंगे ना। गाते हैं, अमृत छोड़ विख काहे को खाए। तो विख है ना। अब नानक के पास तो अमृत नहीं था। वो चेतन बीजरूप, ज्ञान सागर तो मैं हूँ। मुझे नाम–रूप से न्यारा कहते हैं तो फिर ज्ञान सागर कैसे ठहरे। यह नाम–रूप से न्यारा भी यह गुरु लोग कहते हैं। गुरु की तो बहुत महिमा है। गुरु बिन घोर अंधियारा। ज्ञान अंजन सत्गुरु दिया; परन्तु अब तो सभी अंधियारे में हैं। अंधियारा विनाश तो किसका हुआ नहीं है। इसका मतलब, तुम झूठे गुरु हो। जो कहते, वो झूठ। कहते हो, स्त्री नर्क का द्वार है। तुम तो माताओं को निंदते हो। अपनी स्त्री को डुहाग देकर फिर और स्त्रियों के गुरु बनते हो। ज्ञान देना है तो पहले चैरिटी बिगन्स एट होम। इसको ज्ञान दियो। इसको तो डुहागिन कर छोड़ गए। अब सच्चा सत्गुरु तुमको मिला है। कहते हैं, निरंतर मुझे याद करो; क्योंकि पाप का बोझा बहुत है। सभी से जास्ती बोझा तो इन गुरुओं पर है। यह सन्यासी ईश्वर सर्वव्यापी नहीं कहते (वा) गीता के ऊपर मेरा नाम लगाते तो मनुष्य मुझे ही याद करते। यह तो मेरे से योग भ्रष्ट करते हैं। गंगा पर ले जाते हैं। गंगा पतित–पावनी ... है तो तुम पतित ठहरे। फिर अपन को महात्मा क्यों कहलाते हो? बात मत पूछो। तुम तो उनकी चेलियाँ बन रीढ़–बकरियाँ बन गए हो। जो गुरु तेरी निंदा करते, तुमको नर्क का द्वार कहते, सर्पणी कहते हैं। यहाँ बाबा तो तुमको माता गुरु बनाते हैं और वो माताओं का इतना बड़ा तिरस्कार करते हैं। इसलिए कहते, इन गुरुओं को गोली मारो यानी छोड़ दियो। उन्हों का है ही अलग निवृत्तिमार्ग। उन्हों का भी ड्रामा में पार्ट है जो द्वापर में आकर सृष्टि को थमाते हैं, नहीं तो सृष्टि चलायमान हो जाए। तो उन्हों को पवित्र रहना है और हमजिन्स को पवित्र बनाना है। फिमेल्स को तो डुहाग दे जाते हैं जो अपने रचना की पालना नहीं करते। वह सद्गति कैसे पाए सकते। भिक्षा लेते हैं तो इसका एवजा तो कुछ देते नहीं। प० भी एवजा देते हैं। देखो, सुदामा ने चावल मुट्ठी दी तो झट सा० करा दिया। ऐसे महल मिलेंगे। भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ देते ही हैं लेने लिए। निष्काम दान का तो डाप मारते हैं। निष्काम कोई है नहीं सिवाए एक बाप के। राजभाग बच्चों को देकर खुद वानप्रस्थ में चले जाते हैं। अब वानप्रस्थ से वाणी में आता हूँ। कृष्ण तो नहीं आ सकते। वो तो सतयुग में है। कृष्ण रूप बदल कर भी

नहीं आ सकते। कृष्ण को ज्ञान सागर, पतित–पावन तो कहते नहीं। पतित–पावन राधे–कृष्ण गाते हैं क्या? मंदिर में जाते हैं, तो ऐसे ही कह देते, मात–पिता। राम–सीता को भी कह देते, मात–पिता। वो तो जो राम–सीता का बच्चा होगा, उनके मात–पिता ठहरे। यह तो जिसके भी मंदिर में जाएँगे, उनको मात–पिता कहेंगे। जगदम्बा पास जाएँगे तो भी कहेंगे– तुम मात–पिता; परन्तु वो तो माता है, पिता कहाँ है? जौहारी बाज़ार में मम्मा देवी के मंदिर में जाती। अब मम्मा भी तो एक होनी चाहिए। जगदम्बा एक, जगतपिता एक, श्री–श्री जगत्गुरु भी एक होना चाहिए। यहाँ तो ढेर के ढेर हैं। काली, दुर्गा, फलाणी सभी को जगदम्बा कहते। वास्तव में मात–पिता एक शिवबाबा सभी का रचयिता, बाकी सभी रचना। ब्र०वि०शं० भी रचना। सूक्ष्म सृष्टि बाप रचयिते हैं। बस, चित्र मु(ख्य) यह। बाकी जो भी इतने चित्र बनाए हैं, सभी दुकानदारी। वहाँ ही काले कृष्ण को रखेंगे, वहाँ ही गोरे को रखेंगे। वो मंदिर बन जावेंगे। यह तो पता नहीं, गौरा कौन, सांवरा कौन। खुद जो मालिक था वो अब 84 जन्म में पतित हो गया। उनको ही पता नहीं। हम भी बहुत पूजा करते थे। अब बाप आकर कहते हैं, जानते हो, यह कौन है? मैं इनके जन्मों को जानता हूँ, यह नहीं जानते। अब यह इनको भी कहते, तुम बच्चों को भी कहते, सिर्फ अर्जुन को तो नहीं कहते। सभी गपोड़े हैं। उनको कितना उठाते हैं। बाप कहते, बच्चे थोड़ा विचार करो, वेद–शास्त्र सतयुग में होते नहीं, न मंदिर होते; क्योंकि भक्ति पीछे शुरू होती है। ल०ना० जाएँगे तब तो उनके मंदिर बनेंगे ना। जब खुद चेतन में बैठे हैं तो मंदिर कहाँ से आया! इससे सिद्ध है कि ल०ना० के मंदिर नहीं तो और कहाँ से आए? इस समय तो सभी बेसमझ, रोगी हैं। सन्यासी भी रोगी तो बनते हैं; परन्तु स्वर्ग में कोई बीमार नहीं पड़ते। तो यह कितनी बड़ी हॉस्पिटल है। कितनी बड़ी यूनिवर्सिटी है। जहाँ 21 जन्म लिए निरोगी बनते हैं। यहाँ क्या है? न कोई नर्स, न डॉक्टर। कैसे सहज है। तुम घर में भी यह हॉस्पिटल खोल सकते हो। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी चाहिए। तुम गारंटी .... बीमारी का नाम–निशान नहीं रहता; परंतु इसके लिए योग की मेहनत है ज़रूर। बाबा (कहते, तुम)को मेरे पास आना है। आप ही तो कोई पास जा नहीं सकते। सभी को यहाँ पुनर्जन्म लेना ही है। जब तक नाटक पूरा हो, अंत तक सभी को यहाँ आना ही है। अंत में मुझे भी आना है, नहीं तो पता कैसे पड़े– इसका हेड कौन है? जैसे नाटक में भी अंत में सभी स्टेज पर आकर छुट्टी लेते हैं। यह भी बड़ा ड्रामा है। अब तो मैं खुद आ गया हूँ। आदि–मध्य–अंत की नॉलेज तुमको दे रहा हूँ। मैं आता भी एक ही बार हूँ। 24 अवतार मेरे नहीं। उन्होंने तो कण–2 में अवतार कर दिया है। मेरा कितनी दुर्गति की है। अपन से भी जास्ती जन्म दिए है। यह सारी कलियुगी गुरुओं की शैतानी है। उनको गीता में आसुरी सम्प्रदाय कहा गया है। गीता को तो मानते हैं ना। गीता को भी पतित–पावनी नहीं कहते। गंगा को पतित–पावनी कह देते; परन्तु बाप कहते हैं, कोई मनुष्य, मनुष्य को पतित से पावन नहीं बना सकता। पावन करने वाला एक प०। आत्मा को प० नहीं कह सकते। फिर शिवोहम् क्यों कहते? सभी प० कैसे हो सकते? (भक्त) भी भक्ति किसकी करते, क्या प० को भी भक्ति करनी है क्या? फिर तो भक्ति भी खण्डन हो जाती। खुद प० है तो प० की भक्ति–साधना क्यों करते? सभी इतने बड़े–2 साधू–महात्माएँ तुच्छ बुद्धि बन गए हैं। यह भी ड्रामा की नूँध है। जब ऐसे पतित बने तब तो मुझे आना पड़े। वो तो तुच्छ बुद्धि इतना भी नहीं समझते, रावण क्या है। कितना खर्चा कर रावण बनाते हैं, फिर बैठ जलाते हैं। बड़े राजे–महाराजे कितने मूर्ख हैं! बाप तो बहुत सहज समझाते, यह युगल स्त्री–पुरुष हैं रावण। अब रावण राज्य है तब तो राम–राज्य माँगते हैं। फिर भी अपन को रावण थोड़े ही समझते।

बाप समझाते हैं, कोटों में कोई इन बातों को समझते हैं। यह तो अपन को प० नहीं कहते। यह तो कहते, मैं तो पतित मनुष्य हूँ। तो और कोई पावन कैसे हो सकता, जब सच्चा आदि पिता ब्रह्मा ही पतित (हैं)। ऐसे मत समझना, गीता पढ़ने से कोई पावन होंगे। राज्य–योग तो बाप आकर सिखाते हैं। उन्होंने पीछे बैठ बनाया है। अगड़म–बगड़म डाल दिया है। नाम रखा है गीता। जिन्होंने बनाई, जो सुनते–सुनाते आए, सभी इस समय नर्कवासी हैं। अब मैं फिर से बैठ राज्य–योग सिखाता हूँ। मैं तो गीता नहीं उठाता हूँ। मैं तो ज्ञान सागर हूँ, बैठ पढ़ाता हूँ। अब यह ठहरा, मनुष्य से देवता बनने का स्कूल। बाकी शास्त्र तो बाबा के भी बहुत पढ़े हुए हैं। अब जप साहब सुखमनी पढ़ते हैं। अर्थ है साहब को जपो तो सुख मिले। जप साहब में भी महिमा तो उनकी ही है। एको ओंकार, निर्भय, निर्वैर, अकालमूर्त। अब बाप कहते हैं, मैं तेरा गुलाम बनकर आया हूँ। जो भारत पूज्य था, अब पुजारी है। मुझ ज्ञान सागर के बच्चे सभी भस्म हो गए हैं। दुनिया ही कब्रस्तान हो गई है। अब बेहद का मालिक स्वर्ग बनाने आया है। छोटा मकान तो नहीं बनावेंगे। पुरानी दुनिया, पुराना शरीर तो छोड़ना ही है। यह तो सर्प को भी अकल है। पुरानी खाल छोड़ते हैं। यहाँ तो पतित से पावन बनना है। इतना समय तो गुरुओं को याद करते–2, गुरुओं के लॉकेट गले में लटकाते पतित हो गए। हम भी बहुत लॉकेट बनाते थे, इसमें गुरु का, ल०ना० का चित्र डालते थे; परन्तु इससे विकर्म थोड़े ही विनाश होते। इसके लिए तो योग अग्नि चाहिए सर्व शक्तिवान से। अब तो सभी पतित हैं। गाँधी भी कहते थे, पतित–पावन। तो सभी पतित ठहरे ना। कहते थे, आकर राम–राज्य स्थापन करो। गीता हाथ में उठाते थे, फिर कहते थे– पतित–पावन सीता–राम। कृष्ण का नाम भी नहीं लेते थे; क्योंकि राम तो 14 कला, कृष्ण 16 कला। इसका नाम नहीं लेते; परन्तु जैसे पण्डितों ने सुनाया वैसे गाते रहते। रघुपति की तो दुर्दशा कर दी है। सीता को भगा(या) गया। उनका काला मुँह हुआ तो राम का भी काला मुँह कर दिया है। कृष्ण को काला, तो राधे को फिर गौरा कर दिया है। नारायण को काला तो लक्ष्मी को गौरा किया है। कैसे नॉनसेन्स के चित्र बनाए हैं। ना० को क्यों साँवरा किया है? क्या उनको भी सर्प ने डसा। कृष्ण को तो द्वापर में ले गए हैं। वहाँ तो बिच्छू–सर्प हैं। अच्छा, सतयुग में भी बिच्छू–सर्प हैं, जो ना० को डसा? अंधेरी नगरी चरबट राजा..... तो उन्होंने भी देवताएँ, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, सभी समान कर दिया है। तो बाप समझाते हैं, सभी से जास्ती तरस पड़ता है अबलाओं पर। अहिल्याएँ, कुब्जाएँ, (गणि)काएँ इन पर। इसलिए गरीब–निवाज़ गाया हुआ है। तेरे सिर पर कलश रखते हैं। तुमको वरदान देते हैं, तेरे बिगर किसका कल्याण हो नहीं सकता। अब उनको तुम मात–पिता कहते हैं। वो तो सभी का पिता है। अब माता भी तो चाहिए। तो कितना गुह्य राज़ है। जिनके तन में आकर तुमको एडॉप्ट करते हैं वो माता हो गई। यह माता के तन में आने वाला पिता है। तो दोनों हो गए ना। तन तो पुरुष का है, इसलिए इसको भागीरथ, नंदीगण आदि पुरुष के नाम पड़े हैं। अब शिवशंकर नाम लगाए इसको बैल पर बिठाते हैं। अब शंकर के मंदिर में बैल रखते हैं। शंकर तो सूक्ष्मवतनवासी है। वहाँ बैल कहाँ से आया? शिव तो उनसे भी ऊपर है, वहाँ बैल कहाँ से आया? पूछो तो कहेंगे, यह परम्परा से चला आता है। कहते हैं, कृष्ण ने गऊशाला खोली तो क्या गऊ–बैलों को ज्ञान दिया क्या? पाई–पैसे की बात भी नहीं समझते। अब बुद्धि खुली है तो समझते हैं, ह्युमन गऊ की बात है। भागीरथ का नाम भी गाते हैं, पानी की गंगा लाई। ज्ञान गंगा नहीं कहते। तो जहाँ–तहाँ पानी की गंगा रख दी है। भीष्म भी मरता था तो बाण मार उसको गंगा जल पिलाया। अब पानी की तो बात नहीं। वो तो सभी जगह है; परन्तु चेतन ज्ञान गंगाओं बदली पानी की

गंगा लगा दी है। तो साधुओं, संत, महात्मा सभी जाते हैं गंगा में पाप नाश करने। अख़बार में भी पड़ा था कि इतने साधू–महात्मा जाते हैं पावन होने तो ज़रूर पतित आत्मा ठहरे। फिर अपन को महात्मा क्यों कहलाते हैं? अब गुरु का काम है सद्गति करना। वो सच्चा बाप, टीचर, सत्गरु तो मैं हूँ और मैं आता हूँ जब अति धर्म ग्लानि होती है और वो ग्लानि करते हैं यह साधु–संत महात्माएँ। या तो कहते, नाम–रूप से न्यारा है, या तो कहते– भित्तर–ठिक्कर में है। अब बाबा ने तीसरा नेत्र दिया है तो कितना सहज समझ में आता है। तीसरा नेत्र है ब्राह्मणों को। दूसरा न देवताओं को, न शूद्रों को। ल०ना० को पता पड़ता, हम 84 जन्म ले पतित बनूँगा तो सारी खुशी चली जाय; परंतु वहाँ यह ज्ञान प्रायःलोप है; क्योंकि ज्ञान से होती है सद्गति। वहाँ तो है ही सद्गति, तो परम्परा कहाँ चला।

अब (यह) बातें धारण करनी हैं। यह टेम्पररी हॉस्पिटल बनी है, इसमें तुम क्या बनने आए हो? योग से सदा निरोगी बनते हो। इसमें रेस है पहले कौन? शिवबाबा पास योग और ज्ञान से पहुँचता है। योग से पाप दगद(दग्ध) होंगे। ऐसे नहीं, गंगा में टुबका मारने से पावन होंगे। ऐसे होते तो पहले जो मच्छ–कच्छ वहाँ रहते हैं, वो पावन होते। इस समय तो सभी पतित हैं। यह साधु–सन्यासी निर्विकारी न बनते तो भारत और विकारों में जल जाता। अब तो यह नर्क बना है, सभी नर्कवासी हैं। नर्क बनाया है माया रावण ने। स्वर्ग बनाने वाला है ईश्वर। यह है खेल। सन्यासी तो कहते, माया मिथ्या है। ईश्वर नाम–रूप से न्यारा है। बाकी क्या रहा! बाबा तो बहुत सहज समझाते हैं, सिर्फ याद करने की मेहनत है। इसलिए टाइम मिला है, जां जी तां पी। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह है पापात्माओं की दुनिया। वो पुण्यात्माओं की दुनिया। अब यहाँ जो जितना पुण्य करेंगे, ज्ञान धारण करेंगे, इतना पद पाएँगे। इसके लिए ज्ञान सागर तुमको पढ़ाए रहे हैं। तेरे (सामने) तो साधु–महात्मा भी (भुट्टू) हैं। 100% नॉनसेन्स हैं, जो अपन को श्री–श्री 108 जगतगुरु, शिवोहम् कहते हैं। श्री–2 तो शिवबाबा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। यह श्री–2 कहलाते हैं, ठगते हैं। ठग बन गए हैं। हैं तो सभी पतित। पतित दुनिया में रहते हैं। जीवन मुक्त तो कोई नहीं है। यहाँ अब तुम पढ़ते हो प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने लिए। वो तो मनुष्य से बैरिस्टर बनते हैं। यहाँ देवी–देवता बनते हैं। गाते हैं, मानुष से देवता किये.....यह सन्यासियों लिए तो नहीं गाते। यह मेरी महिमा है। मैं प्रवेश भी उनमें करता हूँ जिनका अन्तिम जन्म है। आएँगे भी वो, जो कल्प पहले बने थे। वह ही आकर फिर राज्य–भाग्य लेंगे। इसलिए बाप आकर तेरा गुलाम बना है। कहते हैं, मैं गुलाम तेरा। सन्यासी कभी वन्दे मातरम् नहीं कहेंगे। वो अहंकारी हैं। बाप कितना निरअहंकारी है। माताएँ पाँव पड़ती है तो मना करते हैं, मैं तो तेरा गुलाम हूँ, तेरी सेवा करने आया हूँ। इसलिए यह मकार(शरीर) लोन पर लिया है। जैसे यह मकान भी लोन पर लिया है ना। इनको (बाबा को) मैं किराया भी अच्छा देता हूँ। पतित है, गरीब है तो इनको अच्छा ही किराया देता हूँ। अब बाप कहते हैं, शास्त्र तो पढ़ते–2 नर्कवासी बने हो, अब मैं जो सुनाता हूँ वो सुनो। कहते, शास्त्र तो अनादि हैं। अच्छा, अनादि से क्या हुआ? पढ़ते–2 नर्कवासी बन गए। सभी भक्तिमार्ग दुर्गति को पहुँच गए। गीता भी झूठी हो गई। ड्रामा में यह भी चाहिए, नहीं तो देवता धर्म का शास्त्र कौन–सा? और तो सच्चा शास्त्र है; परन्तु गीता में फिर बहुत मिक्स कर झूठा कर दिया है। द्वापर ले गए तो सभी खलास हो गया। अब शिवबाबा सर्वेन्ट बन माताओं को पढ़ाते हैं। दादा भी सर्वेन्ट है। वन्दे मातरम् कहते हैं। तुमको ऊँचा उठाते हैं। पहले लक्ष्मी, पीछे ना०। प्रवृत्तिमार्ग है। सन्यासी तो निवृत्तिमार्ग के हैं। यह तो अभी तमोप्रधान बने हैं तो नारियों के भी गुरु बनते हैं। अपनी स्त्री का गुरु नहीं बनते। वो ताकत नहीं। अच्छा, बापदादा, मीठी–2 जगदम्बा का सिकीलधे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ